Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 12

लोक प्रशासन एवं प्रबंधन, खेल एवं योग, व्यवहार एवं विधि

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-12

लोक प्रशासन एवं प्रबंधन

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**प्रशासन एवं प्रबंधन**
	• प्रशासन
	  ○ प्रशासन के दृष्टिकोण
	  ○ लोक–प्रशासन
	• प्रबन्ध
	  ○ लोक प्रशासन की प्रकृति
	  ○ लोक प्रशासन का क्षेत्र
	  ○ लोक प्रशासन के महत्व में वृद्धि के कारण (कार्यक्षेत्र में)
	• विकासशील व विकसित देशों में लोक प्रशासन की भूमिका
	• विकसित और विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका
	  ○ लोक प्रशासन का अध्ययन के विषय के रूप में विकास
	  ○ निकोलस हेनरी के अनुसार लोक प्रशासन के विकास के चरण
	• भारत में लोक प्रशासन विषय का विकास
	• नवीन लोक प्रशासन
	  ○ NPA के उदय के कारण
	  ○ नव लोक प्रशासन के लक्ष्य
	• लोक प्रशासन के सिद्धान्त
	• वैज्ञानिक प्रबन्धन
	  ○ FW टेलर का योगदान
	  ○ वैज्ञानिक प्रबन्धन की आलोचनाएँ
	  ○ वैज्ञानिक प्रबन्धन की वर्तमान प्रासंगिकता
	• मानव सम्बन्ध उपागम
	  ○ मानवीय सम्बन्ध उपागम की आलोचनाएँ
	  ○ मानव सम्बन्ध उपागम की वर्तमान प्रासंगिकता
	• व्यवहारवादी सिद्धांत
	  ○ विशेषताएँ/मान्यताएँ
	  ○ व्यवहारवादी उपागम का महत्व
	  ○ व्यवहारवादी उपागम की आलोचनाएँ
	• मानव–सम्बन्ध उपागम व व्यवहारवादी उपागम में समानताएँ
	  ○ असमानताएँ
	• नौकरशाही उपागम
	• संरचनात्मक – प्रकार्यात्मक उपागम
	  ○ संरचनात्मक – प्रकार्यात्मक उपागम की मान्यताएँ/विशेषताएँ
	  ○ आलोचनाएँ
	• व्यवस्था सिद्धान्त
	  ○ व्यवस्था सिद्धान्त की विभिन्न विशेषताएँ/मान्यता
	  ○ व्यवस्था सिद्धान्त का महत्व
	• आलोचनाएँ
		1

2.	**संगठन के सिद्धान्त** • पदसोपान ○ पदसोपान की विशेषताएँ ○ पदसोपान का महत्त्व ○ पदसोपन के दोष ○ पदसोपान से उत्पन्न दोषों को दूर करने के उपाय • आदेश की एकता ○ विशेषताएँ ○ महत्त्व ○ आदेश की एकता की प्रासंगिकता ○ कमी ○ आदेश की एकता को प्रभावित करने वाले तत्व • नियंत्रण का क्षेत्र ○ नियंत्रण के क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कारक ○ वर्तमान में नियंत्रण के क्षेत्र के विस्तृत होने के कारण • कॉर्पोरेट गवर्नेंस ○ कॉर्पोरेट गवर्नेंस की विशेषताएँ ○ कॉर्पोरेट गवर्नेंस के सिद्धान्त ○ कॉर्पोरेट गवर्नेंस का महत्त्व • **सामाजिक उत्तरदायित्व** ○ CSR के प्रावधान ○ CSR में शामिल गतिविधियाँ ○ CSR के लाभ ○ CSR के सम्बन्धित समस्याएँ	**43**
3.	**शक्ति, प्राधिकार, वैधता,उतरदायित्व, प्रत्यायोजन** • शक्ति ○ व्यवहार में परिवर्तन की दृष्टि से शक्ति के प्रकार ○ शक्ति का स्त्रोत ○ शक्ति की विशेषताएँ व लक्षण ○ शक्ति प्रयोग की सीमाएँ ○ शक्ति के प्रकार ○ शक्ति की संरचना • सत्ता ○ सत्ता की विशेषताएँ ○ सत्ता के स्त्रोत ○ सत्ता के स्त्रोत से सम्बन्धित सिद्धान्त/दृष्टिकोण/विचारधारा ○ सत्ता के प्रकार ○ सत्ता के अन्य तीन प्रकार ○ सत्ता पर नियंत्रण या सीमाएँ ○ शक्ति व सत्ता में अन्तर • वैधता ○ वैधता के स्त्रोत ○ वैधता के प्रकार ○ वैधता की विशेषताएँ/लक्षण ○ वैधता को बनाए रखने के उपाय ○ शक्ति, सत्ता तथा वैधता में सम्बन्ध • उत्तरदायित्व ○ उत्तरदायित्व के प्रकार	**57**

	○ उत्तरदायित्व की विशेषताएँ ○ प्रशासनिक प्रक्रिया में उत्तरदायित्व के तीन प्रकार है– • प्रत्यायोजन ○ प्रत्यायोजन का महत्व ○ प्रत्यायोजन के प्रकार ○ प्रत्यायोजन में बाधाएँ	
4.	**नव लोक प्रबंधन(NPM)** • NPM की आलोचना • NPA व NPM में अन्तर • नवीन लोक प्रबंधन का उदय एवं विकास का क्रम • नवीन लोक प्रबंधन की विशेषताएँ/तकनीकें • परिवर्तन का प्रबन्ध ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के कारण ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के चरण ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के महत्त्व ○ परिवर्तन के प्रबन्ध के विरोध के कारण ○ अच्छे परिवर्तन के प्रबन्ध के गुण	**70**
5.	**प्रशासन के आधारभूत मूल्य** • समर्पण ○ एक लोकसेवक का समर्पण ○ लोकसेवा में समर्पण के लाभ • सत्यनिष्ठा ○ सत्यनिष्ठा के लाभ ○ सत्यनिष्ठा पतन के कारण ○ सत्यनिष्ठा वृद्धि के उपाय ○ भारत में सत्यनिष्ठा वृद्धि हेतु ढॉचा • प्रशासन में गैर पक्ष धारिता ○ प्रशासन में गैर पक्षधारिता का लाभ ○ गैर पक्षधारिता वृद्धि के उपाय • निष्पक्षता ○ निष्पक्षता के प्रशासन में लाभ • सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ ○ सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ ○ सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों में विवाद के मुख्य बिन्दु ○ सामान्यज्ञों व विशेषज्ञों के विभिन्न तर्क ○ सामान्यज्ञ – विशेषज्ञ विवाद के विभिन्न समाधान	**77**
6.	**प्रशासन पर नियंत्रण, विकास प्रशासन** • विधायी नियंत्रण ○ संसदीय नियंत्रण की तकनीकें ○ बजट प्रणाली ○ लेखा परीक्षा पद्धति ○ सीमाएँ ○ संसदीय नियंत्रण की सीमाएँ (अप्रभावशीलता) • प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण ○ न्यायिक नियंत्रण की सीमाएँ • प्रशासन पर विधायी तथा न्यायिक नियंत्रण ○ प्रशासन के ऊपर विधायिका का नियंत्रण :– (केन्द्र के संदर्भ में संसदीय नियंत्रण)	**83**

	○ प्रशासन के ऊपर न्यायपालिका का नियंत्रण ○ प्रशासनिक अधिकरण • विकास प्रशासन ○ विकास प्रशासन के उदय के कारण ○ विकास प्रशासन में 4P ○ विकास प्रशासन की विशेषताएँ ○ विकास प्रशासन के उद्देश्य ○ विकास प्रशासन का क्षेत्र ○ विकास प्रशासन का महत्त्व ○ विकास प्रशासन में समस्याएँ • प्रशासनिक विकास ○ प्रशासनिक विकास की विशेषताएँ ○ प्रशासनिक विकास में विभिन्न समस्याएँ • लोक व निजी प्रशासन	
7.	**राजस्थान में प्रशासनिक ढांचा एवं प्रशासनिक संस्कृति** • राज्यपाल ○ नियुक्ति ○ कार्यकाल तथा पदमुक्ति ○ आवश्यक योग्यताएँ ○ शपथ ○ वेतन तथा अन्य सुविधाएँ ○ शक्तियाँ व कार्य ○ मुख्यमंत्री व मंत्री–परिषद से प्रयुक्त शक्तियाँ ○ विधायी शक्ति ○ वित्तीय शक्तियाँ ○ न्यायिक शक्तियाँ ○ विवेकाधिकार शक्तियाँ ○ मुख्यमंत्री की नियुक्ति व विमुक्ति ○ विधान सभा की बैठक का आह्वान करना ○ विधान सभाः सत्रावसान व भंग करना **(अनु.174)** ○ राज्यपाल का सम्बोधन ○ विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ रोकना ○ विधेयक पर हस्ताक्षर ○ सूचनाएँ प्राप्त करना ○ राज्यपाल की स्थिति • **मुख्यमंत्री** ○ मुख्यमंत्री की नियुक्ति ○ पदमुक्ति ○ भूमिका व कार्य ○ मुख्यमंत्री की राज्य प्रशासन में वास्तविक स्थिति • **मंत्रिपरिषद** ○ मंत्रिपरिषद् : गठन व कार्य ○ मंत्रिपरिषद्ः गठन ○ मुख्यमंत्री ○ मंत्रिपरिषद् व मंत्रिमण्डल ○ मंत्रियों की योग्यता ○ मंत्रियों की नियुक्ति ○ शपथ ग्रहण ○ आकार ○ विभाग वितरण	**102**

	○ कार्यकाल • राज्य सचिवालय ○ गठन एवं कार्य • शासन सचिवालय ○ भूमिका ○ सचिवालय तथा प्रशासनिक सुधार • मुख्य सचिव	
8.	**जिला प्रशासन का संगठन** • जिला कलेक्टर ○ जिला कलेक्टर की भूमिका ○ जिला कलेक्टर के कार्य ○ जिला कलेक्टर की भूमिका की समीक्षा • जिला पुलिस अधीक्षक ○ मुख्य कार्य • उप खण्ड एवं तहसील प्रशासन तंत्र ○ नियुक्ति ○ उप–खण्ड अधिकारी के कार्य • तहसीलदार ○ तहसीलदार की भूमिका • पटवारी • पंचायती राज व्यवस्था ○ भारत में पंचायती राज संस्थाओं का विकास ○ बलवंत राय मेहता समिति ○ अशोक मेहता समिति (1977–78 ई.) ○ G.V.K. राव समिति (1985 ई.) ○ L.M. सिंघवी समिति (1987 ई.) ○ P.K. थुंगन समिति (1988 ई.) ○ गाडगिल समिति (1988 ई.) ○ गिरधारी लाल व्यास समिति (1973 ई.) ○ पंचायती राज संस्थाओं से सम्बन्धित प्रावधान ○ पेसा Act (Panchayat Extension to Scheduled Area Act- 1996) • राजस्थान पंचायती राज अधिनियम – 1994	**122**
9.	**संवैधानिक एवं सांविधिक आयोग** • लोक सेवा आयोग (संगठन एवं कार्य प्रणाली) ○ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ○ सदस्यों की नियुक्ति और पदावधि ○ सदस्यों को पद से हटाया जाना ○ लोक सेवा आयोग की कार्यपालिका से स्वतंत्र के सांविधानिक प्रावधान ○ लोक सेवा आयोगों के कार्य ○ लोक सेवा आयोगों के प्रतिवेदन • राजस्थान राज्य वित्त आयोग ○ नगर निकायों की वित्तीय समीक्षा • लोकायुक्त ○ नियुक्ति ○ कार्यकाल ○ अधिकार क्षेत्र ○ जांच प्रक्रिया ○ अन्य विशेषतायें	**140**

	○ राजस्थान लोकायुक्त और उप–लोकायुक्त अधिनियम, 1973 ○ लोकायुक्त का क्षेत्राधिकार • राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग ○ गठन ○ आयुक्त के अधिकार एवं कार्य ○ आयुक्त का कार्यकाल • राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग ○ नियुक्ति ○ राज्य आयोग के कार्य एवं उसमें निहित शक्तियां ○ आयोग द्वारा शुरू किए गए अन्य प्रमुख कार्य ○ नागरिक स्वतंत्रताएं • राजस्थान गारण्टेड डिलीवरी ऑफ पब्लिक सर्विस एक्ट – 2011 ○ मुख्य प्रावधान ○ सीमाएँ व चुनौतियाँ ○ अधिनियम का महत्व • नागरिक अधिकार पत्र ○ घटक/सिद्धांत ○ **सिटीजन चार्टर में शा**मिल बिन्दु ○ **आवश्**यकता • राजस्थान जन सुनवाई का अधिकार अधिनियम–2012 ○ क्षेत्राधिकार ○ सुनवाई का स्तर • उपभोक्ता संरक्षण अधिनिमय–1986 • अधिनियम के तहत उपभोक्ताओं के अधिकार	

खेल एवं योग

S.No.	Chapter Name	Page No.
10.	**भारत एवं राजस्थान राज्य की खेल नीति** • भारत में खेल नीतियाँ • खेल प्रोत्साहन योजनाएं • **राजस्थान की खेल अकादमियाँ**	159
11.	**भारतीय खेल प्राधिकरण एवं राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद** • भारतीय खेल प्राधिकरण • राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद • मुख्यमंत्री खेल प्रतिभा खोज योजना • समिति एवं कार्यकारी एजेन्सी • मिशन ओलम्पिक प्रकोष्ठ **(**एमओसी**.)** • जिला क्रीड़ा परिषदें • राजस्थान युवा बोर्ड	167
12.	**राष्ट्रीय एवं राज्य खेल पुरस्कार** • मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार • अर्जुन पुरस्कार • द्रोणाचार्य पुरस्कार • महाराणा प्रताप पुरस्कार • गुरू वशिष्ठ पुरस्कार	175

	• मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ट्राफी • राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार • राजस्थान के पद्मश्री पाने वाले खिलाड़ी • राष्ट्रीय खेल पुरस्कार **2021-** विभिन्न श्रेणियों में विजेता • मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार **2021**	
13.	**सकारात्मक जीवन पद्धति . योग** • परिभाषा • महत्व • अश्टांगिक योग • षट्कर्म • स्वास्थ्य के लिए योग • शारीरिक दक्षता के लिए योग • एकाग्रता के लिए योग • यौगिक क्रियाओं के उद्देश्य • भारत के प्रसिद्ध योगगुरु • अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस • योग का महत्व • योग का लक्ष्य • योग के प्रकार • चिकित्सा के रूप में योग • योग की क्रिया प्रणाली व लाभ • योग और आयुर्वेद	**183**
14.	**भारत के विख्यात खेल व्यक्तित्व** • भारत के श्रेष्ठ खिलाड़ी • राजस्थान के नवोदित खिलाड़ी • प्राथमिक उपचार एवं पुर्नवास • प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण • प्राथमिक चिकित्सा की सीमा • प्राथमिक उपचार में आवश्यक बातें • प्राथमिक उपचार करने वाले व्यक्ति के गुण • प्राथमिक उपचार के मूल तत्व • स्तब्धता का प्राथमिक उपचार • अस्थिमंग का प्राथमिक प्राथमिक उपचार • मोच का प्राथमिक उपचार • रक्तस्राव का प्राथमिक उपचार	**193**
15.	**प्राथमिक उपचार एवं पुर्नवास** • प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण • प्राथमिक चिकित्सा की सीमा • प्राथमिक उपचार में आवश्यक बातें • प्राथमिक उपचार करने वाले व्यक्ति के गुण • प्राथमिक उपचार के मूल तत्व • स्तब्धता का प्राथमिक उपचार • अस्थिमंग का प्राथमिक उपचार • मोच का प्राथमिक उपचार • रक्तस्राव का प्राथमिक उपचार	**202**

16.	**भारतीय खिलाड़ियों की ओलम्पिक, एशियाई खेल, कॉमनवेल्थ एवं पैरा-ओलम्पिक खेल में भागीदारी।** ● ओलम्पिक खेल ● टोक्यो 2020 ओलंपिक्स में भारत का प्रदर्शन ● पैरालंपिक खेल	**205**

व्यवहार

S.No.	Chapter Name	Page No.
17.	**बुद्धि** ● विशेषताएँ ● बुद्धि के प्रकार ● संज्ञानात्मक बुद्धि ● सामाजिक बुद्धि ● संवेगात्मक बुद्धि ● सांस्कृतिक बुद्धि ● बुद्धि-लब्धि **बुद्धि.लब्धि के कारक** ● बुद्धि के निर्धारण तत्व ● मंद बुद्धि ● बुद्धि के सिद्धान्त **कारकीय सिद्धान्त** **प्रक्रिया. उन्मुखी सिद्धान्त** **गार्डनर का बहु बुद्धि सिद्धान्त** ● बुद्धि-परीक्षणों के प्रकार	**210**
18.	**व्यक्तित्व** ● व्यक्तित्व का मनोवैश्लेषिक सिद्धान्त ● व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत ● आल्लपोर्ट के व्यक्तित्व सिद्धान्त **व्यक्तित्व की संरचना** ● व्यक्तित्व के प्रकार **हिप्पोक्रेट्स का वर्गीकरण** **शेल्डन का वर्गीकरण** **युंग का वर्गीकरण** ● व्यक्तित्व के निर्धारण के तत्व ● व्यक्तित्व का मापन	**219**
19.	**अधिगम एवं अभिप्रेरणा** ● अधिगम **अधिगम की विशेषताएँ** : **अधिगम की शैलियाँ** ● स्मृति के मॉडल ● स्मृति तंत्र ● विस्मृति के कारण ● अभिप्रेरणा **कार्य अभिप्रेरणा के सिद्धांत और अभिप्रेरणा का मापन** **प्रतिबल एवं प्रबंधन** ● तनाव की प्रकृति ● तनाव के संकेत और लक्षण	**230**

	• तनाव के प्रकार • तनाव के सामान्य स्रोत • **जीवन रक्षा तनाव (सर्वाइवल स्ट्रेस):** **आंतरिक तनाव** **पर्यावरणीय दबाव** **दुर्बलता तथा अत्यधिक काम** • तनाव के प्रभाव **शारीरिक प्रभाव** **मानसिक प्रभाव** **व्यवहार प्रभाव** **तनाव से जुड़े कुछ रोग** • तनाव प्रबंधन तकनीकें • मानसिक स्वास्थ्य का प्रोत्साहन	
20.	**प्रतिबल एवं प्रबंधन** • तनाव की प्रकृति • तनाव के संकेत और लक्षण • तनाव के प्रकार • तनाव के सामान्य स्रोत **जीवन रक्षा तनाव)सर्वाइवल स्ट्रेस** **आंतरिक तनाव** **पर्यावरणीय दबाव** **दुर्बलता तथा अत्यधिक काम** • तनाव के प्रभाव **शारीरिक प्रभाव** **मानसिक प्रभाव** **व्यवहार प्रभाव** **तनाव से जुड़े कुछ रोग** • तनाव प्रबंधन तकनीकें **मानसिक स्वास्थ्य का प्रोत्साहन**	**241**

विधि

S.No.	Chapter Name	Page No.
21.	**विधि की अवधारणा** • विशेषताएँ • गुण • दोष • सिविल तथा दण्डात्मक न्याय **सिविल तथा दांडिक कार्यवाही में अन्तर** • स्वामित्व • स्वामित्व के अधिकार • स्वामित्व के अर्जन की रीतियाँ **हिन्दू विधि** **रोमन विधि** • कब्ज़ा **तथ्यतः कब्जा और विधित कब्जा** • कब्जाधारी के अधिकार • कब्जे का अर्जन **लेना**	**248**

	परिदान **विधि के प्रवर्तन द्वारा** ● कब्जा और स्वामित्व में सम्बन्ध **कब्जा तथा स्वामित्व अधिकार** **दोनों के अधिकार** **स्वामित्व और कब्जे के बीच अंतर** ● विधिक व्यक्ति **/** व्यक्तित्व **व्यक्ति के प्रकार**: **विधिक व्यक्ति के प्रकार** ● 'दायित्व' **दायित्व के प्रकार**. ● अधिकार और कर्तव्य **अधिकार** **नैतिक अधिकार तथा विधिक अधिकार में भेद** **अधिकार और शक्ति में भेद** **कर्तव्य और अधिकार में परस्पर सम्बन्ध** **कर्तव्य का वर्गीकरण** **विधिक अधिकार**	
22.	**वर्तमान विधिक मुद्दे** ● सूचना ● भारत में सूचना का अधिकार **सूचना का अधिकार** **लोक सूचना अधिकारी के कर्त्तव्य** **अदेय सूचना** **आंशिक प्रकटीकरण** **तृतीय पक्ष से संबंधित सूचना के प्रकटीकरण की प्रक्रिया** **अपील** **सूचना आयोग** **संरचना** **नियुक्ति** **योग्यता** **कार्यकाल** **निष्कासन** **शक्तियां और कार्य** **न्यायालय का हस्तक्षेप** **समीक्षा** ● सूचना प्रौद्योगिकी सम्बन्धित विधि **उद्देश्यों एवं कारणों का विवरण** ● आईटी एक्ट**, 2000** ● जुर्माना एवं क्षेत्राधिकार से संबंधित प्रावधान ● साइबर एपिलेट ट्रिब्यूनल सिविल प्रक्रिया संहिता ● साइबर आतंकवाद के लिए दंड का प्रावधान किसी व्यक्ति द्वारा ● कम्प्यूटर पर अश्लील सामग्री का प्रकाशन ● साइबर अपीलीय न्यायाधीकरण ● बौद्धिक संपदा अधिकार **बौद्धिक संपदा अधिकारों की विशेषताएं** **ट्रिप्स** (TRIPS: Trade Related Aspects of Intellectual Property Rights) ● विश्व बौद्धिक संपदा संगठन **(World Intellectual Property Organisation):** **बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रकार** **राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार नीति**	**265**

23.	**स्त्रियों एवं बालकों के विरूद्ध अपराध** • घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम**, 2005** **अधिनियम का उद्देश्य** **घरेलू हिंसा** (**धारा** 3) **शिकायत की प्रक्रिया** (**धारा** 4, 5) **प्रदत्त उपचार** • महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न **(**निवारण**,** प्रतिषेध और प्रतितोष**)** अधिनियम**, 2013** **संरक्षण** **कार्यस्थल** (**धारा** 2 (**ण**)) **अधिनियम के अधीन लैंगिक उत्पीड़न** (**धारा** 2 (**ढ**)) **कर्मचारी** (**धारा** 2(**च**)) **परिवाद समिति** **आंतरिक परिवाद समिति** (**धारा** 4) **आंतरिक परिवाद समिति की संरचना** (**धारा** 4 (2)) **अन्य अपेक्षाएं** **जिला अधिकारी की अधिसूचना** (**धारा** 5) **स्थानीय परिवाद समिति** (**धारा** 6) **अंतरिम अनुतोष** **मिथ्या या द्वेषपूर्ण परिवाद** (**धारा** 14) **नियोजक के कर्तव्य** (**धारा** 19) **समय.सीमाएं** • लैंगिक अपराधों से बालकों को संरक्षण अधिनियम**, 2012** **बालकों के विरुद्ध लैंगिक अपराध** **लैंगिक हमला** **अश्लील प्रयोजनों के लिए बालक का उपयोग** **बालक के कथनों को अभिलिखित करने के लिए प्रक्रिया**: **विशेष न्यायालय** • बालश्रम **भारत में बाल श्रम के खिलाफ राष्ट्रीय कानून और नीतियां** **अशिक्षा और बाल मजदूर** **बाल मजदूरी ओर कुछ आंकड़े** **बाल मजदूरी पेशा. स्वास्थ्य बाधाएँ एवं खतरा** **बाल मजदूरी अधिनियम**	**281**
24.	**राजस्थान में महत्त्वपूर्ण भूमि विधियां** • राजस्थान के निर्माण के समय भूधारण प्रणालियां **राजस्थान में शामिल होने वाले राज्यों में काश्तकारी कानून** • राजस्थान काश्तकारी अधिनियम **1955** • राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम**, 1956**	**302**
25.	**माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम**, **2007** **2007 अधिनियम और संशोधन बिल के बीच अंतर**	**318**

1 CHAPTER प्रशासन एवं प्रबंधन

प्रशासन

- प्रशासन शब्द लैटिन भाषा के शब्द Ad-Ministiare से मिलकर बना है ।
- जिसमें Ministiare का अभिप्राय कार्यों को व्यवस्थित करना, देखभाल करना और सेवा प्रदान करने से है ।
- किसी सामान्य उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया सामूहिक प्रयास प्रशासन कहा जाता है ।

सामूहिक प्रयास ← प्रशासन → उद्देश्य

↓

विभिन्न व्यक्ति

लूथर गुलिक के अनुसार :-

"प्रशासन का सम्बन्ध निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यों को करवाने से है ।"

पर्सी मैकक्वीन के अनुसार – केन्द्रीय अथवा स्थानीय सरकार के कार्यों से संबंधित प्रशासन ही लोक प्रशासन है ।

वुडरो विल्सन के अनुसार – लोक – प्रशासन विधि की विस्तृत तथा व्यवस्थित प्रयुक्ति है ।

एल.डी. व्हाईट के अनुसार – लोक – प्रशासन उन सभी कार्यों को कहते है, जिनका उद्देश्य उपर्युक्त सत्ता के द्वारा घोषित की गई नीति को लागू करना या पूरा करना होता है ।

प्रशासन की विशेषताएँ :-

1. प्रशासन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है ।
2. प्रशासन के दो प्रकार है –
   I. लोक प्रशासन
   II. निजी प्रशासन
3. प्रशासन में कुछ निश्चित उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा सामूहिक प्रयास किया जाता है ।
4. प्रशासन शब्द का प्रयोग प्रायः बडे और विशाल संगठनों के लिए किया जाता है ।
5. प्रशासन के उद्देश्य व इसमें काम करने वाले व्यक्तियों के उद्देश्य में भिन्नता हो सकती है ।

डोनहम के अनुसार :-

"यदि आधुनिक मानव सभ्यता का पतन हुआ तो ऐसा मुख्यतया प्रशासन की विफलता के कारण होगा ।"

प्रशासन के दृष्टिकोण :-

1. प्रबन्धकीय दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण का मानना है कि प्रशासन में POSDCORB (Planning, Organising, Staffing, Directing, Co-ordination, Reporting, Budgeting) से सम्बन्धित गतिविधियाँ संपन्न करने वाले उच्च अधिकारी प्रशासन का भाग होते है ।

अर्थात्

- संगठन में केवल उच्च स्तरीय निर्णय लेने वाले व उनका क्रियान्वयन करने वाले व्यक्ति ही प्रशासन का भाग है ।

  नोट – वर्ष 1971 में इसमें E-Evaluation जोडा गया ।

2. एकीकृत दृष्टिकोण :-

- इस दृष्टिकोण का मानना है कि संगठन में सभी कार्य व प्रक्रिया चाहे वे किसी भी स्तर के कर्मचारी द्वारा संपन्न की जाए, प्रशासन का भाग है ।

अर्थात्

- उच्च पदाधिकारी, तकनीकी कर्मचारी, लिपिकीय वर्ग व सहायक कर्मचारी भी प्रशासन का महत्वपूर्ण अंग है ।
- एकीकृत दृष्टिकोण को व्यापक दृष्टिकोण माना जाता है ।

लोक-प्रशासन

- लोक प्रशासन, प्रशासन का वह भाग है जो एक विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर राजनीतिक निर्णयों को कार्यरूप में लागू करता है ।
- एपलबी के अनुसार – "नीति निर्माण ही लोक प्रशासन का सार है ।"
- अल्बर्ट साइमन के अनुसार – "साधारण प्रयोग में लोक प्रशासन का अर्थ राष्ट्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखाओं की क्रिया से है ।"
- फिफनर के अनुसार – "सरकार का कार्य करना ही लोक प्रशासन है चाहे वह स्वास्थ्य प्रयोगशाला में एक्स-रे मशीन का संचालन हो या टकसाल में सिक्के डालना हो ।"

प्रशासन	लोक-प्रशासन
1. प्रशासन व्यापक दृष्टिकोण है ।	1. यह संकुचित दृष्टिकोण है क्योंकि यह प्रशासन का भाग है । तथा सार्वजनिक नीतियों से संबंधित है ।
2. प्रशासन एक क्रिया-प्रक्रिया दोनों है ।	2. लोक प्रशासन एक तंत्र है जिसके द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी कार्य संपन्न किए जाते है ।
3. इसका सम्बन्ध विभिन्न लोगों से कार्य करवाने से है ।	3. यह दोहरे स्वरूप वाला है – विषय तंत्र
4. किसी सामान्य उद्देश्य को लेकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया सामूहिक प्रयास प्रशासन है ।	4. लोक प्रशासन सरकार के कार्य का वह भाग है जिसके द्वारा सरकार के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति होती है ।

शासन	लोक – प्रशासन
1. शासन का सम्बन्ध सरकार से होता है ।	1. लोक प्रशासन का सम्बन्ध नौकरशाही से होता है ।
2. इसका संचालन जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है ।	2. इसका संचालन सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों द्वारा किया जाता है ।
3. यह निर्देश संविधान से प्राप्त करता है ।	3. लोक प्रशासन सरकार के निर्देशन पर कार्य करता है ।
4. यह जनता के प्रति उत्तरदायी है अतः इन्हें जनसेवक कहा जाता है ।	4. ये सरकार के प्रति उत्तरदायी है अतः इन्हें सरकारी सेवक कहा जाता है ।
5. शासन का मुख्य कार्य नीति निर्माण है ।	5. लोक प्रशासन नीतियों का क्रियान्वयन करता है ।

प्रबन्ध

- प्रशासन या संगठन का वह भाग जो संसाधनों के समुचित उपयोग, उनमें समन्वय तथा संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति के क्रम में उनका संचालन करना सुनिश्चित करवाता है ।
- प्रबन्ध द्वारा प्रायः लूथर गुलिक द्वारा प्रतिपादित POSDCORB से सम्बन्धित कार्य सम्पन्न किए जाते है ।

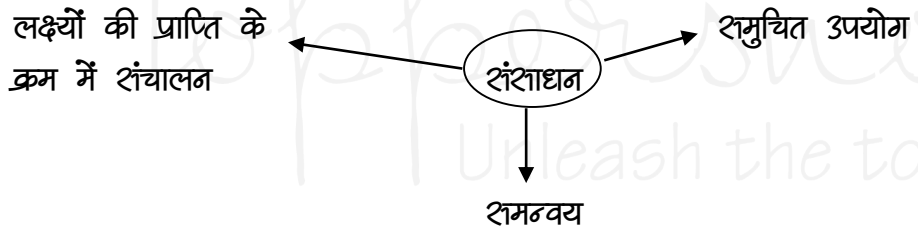

प्रशासन व प्रबन्ध में अन्तर :- इनके मध्य सर्वप्रथम अन्तर ऑलिवर शेल्डर द्वारा सन् 1923 में 'फिलोसॉफी ऑफ मैनेजमेन्ट' पुस्तक में किया गया ।

प्रशासन	प्रबन्ध
1. प्रशासन एक व्यापक अवधारणा है ।	1. प्रबन्ध प्रशासन का ही अंग है अतः यह संकुचित अवधारणा है ।
2. प्रशासन का मुख्य कार्य संगठन के लक्ष्यों को निर्धारित करना है ।	2. प्रबन्ध इन निर्धारित लक्ष्यों (उक्त) को प्राप्त करने का प्रयास करता है ।
3. प्रशासन संगठन में प्रभावी निर्देशन सुनिश्चित करता है ।	3. प्रबन्ध संगठन में प्रभावी कार्य निष्पादन सुनिश्चित करता है ।

प्रशासन व प्रबन्धन से सम्बन्धित विभिन्न विचारधाराएँ

अमेरिकन

प्रशासन (प्रबंध)

- यह सर्वमान्य विचारधारा है जिसका मानना है कि प्रशासन व्यापक है तथा प्रबन्ध इसमें सम्मिलित है ।
- शुल्ज, रॉबिन्सन ने इसका समर्थन किया

एंग्लों विचारधारा या आंग्ल विचारधारा

प्रशासन (प्रबंध)

- इस विचारधारा का मानना है कि प्रबन्ध एक व्यापक शब्द है जिसमें प्रशासन सम्मिलित है ।
- जे.पी. डेनियल, जेम्स लुण्डी

तीसरी विचारधारा

प्रशासन = प्रबंध

- इस विचारधारा का मानना है कि प्रबंध व प्रशासन एक-दूसरे के पर्यायवाची है तथा इन दोनों के मध्य किसी प्रकार का अंतर नही है ।
- फॉलेट, उर्विक, M.P. शर्मा

लोक प्रशासन की प्रकृति

1. **प्रबन्धकीय व एकीकृत :-**

प्रबन्धकीय :-

- इस दृष्टिकोण का मानना है कि लोक प्रशासन की प्रकृति केवल उच्च स्तरीय प्रशासकीय निर्णय लेने, नीतियों व कानूनों के व्यावहारिक क्रियान्वयन को सुनिश्चित कराने से है ।

  अर्थात्

  संगठन में उत्तरदायी व उच्च पदों पर आसीन व्यक्ति तथा उनके कार्य लोक प्रशासन की प्रकृति को स्पष्ट करते है ।
- इसके समर्थक :- साइमन, स्मिथबर्न है ।

एकीकृत :-

- संगठन में उच्च स्तर से लेकर निम्नतम स्तर तक कार्यरत समस्त कार्मिकों की क्रियाओं को यह दृष्टिकोण लोक प्रशासन की प्रकृति में सम्मिलित करता है ।
- समर्थक : विलोबी, व्हाईट है ।

2. **लोक प्रशासन विज्ञान या कला के रूप में :-** समर्थक - विलोबी, विल्सन, मर्सन

लोक प्रशासन विज्ञान के रूप में :-

(a). लोक प्रशासन में विज्ञान की भाँति सर्वमान्य सिद्धान्त व नियम है । ये सिद्धान्त सार्वभौमिक है । उदाहरण- पदसोपान, आदेश की एकता, नियंत्रण का क्षेत्र, संचार, पर्यवेक्षण, अभिप्रेरणा (motivation), केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण आदि ।